The Title of Research Work

"Critical Analysis of M.N. Roy's Political Philosophy"

"एम0 एन0 रॉय के राजनीतिक दर्शन का आलोचनात्मक विश्लेषण"

Synopsis

Submitted to

Maharshi Dayanand University, Ajmer for the Award of
Ph.D. in Political Science

Under Supervision of :

Dr. S.K. Singh
Lecturer in Political Science
Government College, Ajmer

Submitted by :

Jyoti Deval
Lecturer in Political Science
Government College, Ajmer

APPENDIX - IV

Outline of Proposed Research Work

INDEX

1.	Name of Scholar	**Jyoti Deval**
2.	Title of Research Work	**"Critical Analysis of M.N. Roy's Political Philosophy"** "एम0 एन0 रॉय के राजनीतिक दर्शन का आलोचनात्मक विश्लेषण"
3.	Location (a) Institution /Department where the work is to be done	**Government College, Ajmer** **Department of Political Science**
4.	Introduction of Proposed Investigation	
5.	Importance of Proposed Investigation	
6.	Review of work already done on the subject of Proposed Research Study	
7.	Research gaps identified in the proposed field of investigation	
8.	Objectives	
9.	Major Hypothesis, if any	
10.	Research Methodology	
11.	Chapter wise details of proposed research	
12.	Bibliography	
13.	Certificate by Supervisor	

Format For Outline of Proposed Research Work

1.	Name of Scholar (In English)	:	**Jyoti Deval**
	(In Hindi)	:	ज्योति देवल
2.	Title of Research Work (In English)	:	**" Critical Analysis of M.N. Roy's Political Philosophy"**
	(In Hindi)	:	" एम0 एन0 रॉय के राजनीतिक दर्शन का आलोचनात्मक विश्लेषण"
3.	Location		
	a) Institution / Department where the work is to be done	:	**Government College, Ajmer** **Department of Political Science**
	b) Geographical area of Investigation, if any	:	**Rajasthan and all over India**

4. Introduction of Proposed Investigation

प्रस्तावित शोध कार्य का परिचय

भारत के आधुनिक चितंको में मानवेन्द्र नाथ रॉय का अनूठा स्थान रहा है । वे न केवल साम्यवाद के प्रचार एवं प्रसार के अग्रदूत रहे वरन् नवमानववाद के जनक भी माने जाते है । भारत में साम्यवाद का अध्याय उन्हीं के नाम से प्रारम्भ होता है । किन्तु जितनी प्रबलता से उन्होनें साम्यवाद का समर्थन किया, उतनी ही प्रबलता से उन्होनें जीवन के उत्तरार्द्ध में उसका विरोध भी किया । जहाँ एक ओर एशिया और भारत को साम्यवाद का संदेश उन्होनें दिया, वहाँ दूसरी ओर उन्होनें उन्होनें सर्वप्रथम साम्यवाद की भर्त्सना कर सारे विश्व को मानववाद का संदेश भी दिया । यदि भारतीय स्वतन्त्रता आंदोलन से उपर उठकर विचार किया जाए तो यह कहना अतिश्योक्तिपूर्ण नहीं होगा कि उनका ' नवमानववाद ' भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिंतन की विश्व को एक अनुपम देन है ।

मानवेन्द्र नाथ रॉय का राजनीतिक दर्शन दो भागों में विभाजित किया जा सकता है । पहला भाग उनके उन विचारों से संबंधित है जब वे कट्टर मार्क्सवादी थे तथा दूसरा उन विचारों से संबंध रखता है जब वे मार्क्सवाद के विरोधी बन गये अतः मार्क्सवाद को चुनौती देने के लिए उन्होनें नवमानववाद की स्थापना की ।

रॉय के राजनीतिक विचारों में व्यक्ति को अत्याधिक महत्व दिया गया है । उनकी यह धारणा थी कि एक अच्छा व्यक्ति अच्छे समाज की रचना कर सकता है । उनका यह कथन था कि सदियों से राजनीतिक विचारकों ने व्यक्ति के महत्व को नहीं पहचाना । उनके अनुसार व्यक्ति का कार्य केवल आज्ञापालन ही नहीं अपितु अपना स्वतन्त्र अस्तित्व बनाए रखना भी है । स्वतन्त्रता एवं कर्तव्य का व्यक्ति के जीवन में सामंजस्य बैठाया ।

मानवेन्द्र नाथ रॉय का राजनीतिक दर्शन पूर्णतया वैज्ञानिक चिंतन पर आधारित है । उन्होनें अध्यात्मवाद, भौतिकवाद तथा समाजवाद तीनों का सागोपांग अध्ययन कर उनकी उपादेयता अथवा निरर्थकता सिद्ध करते हुए मानववाद को नवीन रूप में प्रस्तुत किया ।

रॉय के राजनीतिक विचारों में नवमानववाद का विशेष महत्व है । एक विचारधारा के रूप में नव मानववाद मानव को व्यवस्था का केन्द्रीय तत्व और अंतिम साध्य मानता है। मानववादी विचारों का प्रवर्तन रॉय से पूर्व भी अनेक विचारकों द्वारा किया गया । रॉय का यह मत था कि उनसे पूर्व प्रवर्तित मानवतावादी विचारों में मानव को न्यायसम्मत एवं सर्वोच्च स्थान प्रदान नहीं किया गया । रॉय का मत था कि पश्चिमी व्यक्तिवाद, गाँधी के आध्यात्म – आधारित आदर्शवाद तथा मार्क्सवादी साम्यवाद, लगभग सभी विचारधाराओं में व्यक्ति की प्रतिष्ठा की किसी ना किसी सीमा तक उपेक्षा की गई।

रॉय के अनुसार पश्चिमी व्यक्तिवाद में व्यक्ति की स्वतन्त्रता पर राज्य तथा समाज द्वारा किए जाने वाले अतिक्रमणों का विरोध तो किया, किन्तु इसमें व्यक्ति की आर्थिक स्वतन्त्रता क महत्व की उपेक्षा की गई । रॉय का मत था कि आर्थिक अभावों से मुक्त, आत्मनिर्भर व्यक्ति ही वस्तुतः स्वतन्त्रता का उपयोग करने में सक्षम हो सकता है ।

मार्क्सवाद पर रॉय का आक्षेप है कि वह मानव के भौतिक कल्याण को तो सुनिश्चित करता है किन्तु आर्थिक कारकों से भिन्न, जीवन के नैतिक प्रयोजनों की गंभीर उपेक्षा करता है । रॉय का नव – मानववाद व्यक्ति की स्वतन्त्रता और स्वायत्तता में विश्वास करता है और उसे ही व्यवस्था का केन्द्र बिन्दु बनाना चाहता है। रॉय ने इस बात का भी खण्डन किया कि मनुष्य स्वभावतः स्वार्थी है अथवा वह अध्यात्मिक और सामाजिक बाध्यताओं के अधीन ही नैतिक आचरण करता है । रॉय के अनुसार विवेक, नैतिकता और स्वतन्त्रता मानव स्वभाव के तीन शाश्वत तत्व है । विवेकशीलता

मानव स्वभाव का सहज लक्षण है । स्वतन्त्रता मानव स्वभाव का स्वभाविक लक्षण है और स्वतन्त्रता साधन मात्र नहीं है अपितु स्वंय में साध्य है । रॉय ने मनुष्य को राष्ट्रीयता के बन्धन से मुक्त करके विश्व बंधुत्व के आदर्श का प्रतिपादन किया । उन्होनें कहा कि " नवमानववाद सार्वभौम है । नैतिक दृष्टि से स्वतन्त्र व्यक्तियों का सार्वभौम समुदाय, राष्ट्रीय राज्यों की सीमाओं से प्रतिबन्धित नहीं होगा । पूँजीवादी, फासीवादी, समाजवादी, साम्यवादी अथवा अन्य प्रकार के वर्गीकरण, बीसवीं शताब्दी में हुए मनुष्य के पुनर्जागरण के प्रभाव से शनैः – शनैः विलुप्त हो जायेगें ।"

मानवेन्द्र नाथ रॉय आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन का एक विशिष्ट आयाम प्रस्तुत करते हैं । रॉय का राजनीतिक चिंतन लम्बी वैचारिक यात्रा का परिणाम है । रॉय के दर्शन में मानव की सर्वोपरिता के प्रति आग्रह निरन्तर विद्यमान रहा । रॉय का चिंतन एक ऐसी व्यवस्था की खोज के प्रति समर्पित आग्रह का परिणाम है जिसमें व्यक्ति की गरिमा को अक्षुण्ण रखते हुए, उसकी भौतिक, नैतिक और आर्थिक उन्नति को सुनिश्चित किया जाए ।

प्रस्तुत शोध ग्रन्थ में एम0 एन0 रॉय के जीवन की प्रारम्भिक अनुभूतियां और उसके विश्व के विभिन्न व्यवस्थाओं के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन किया जाएगा । साथ ही रॉय के सिद्धान्त ' नवमानववाद ' की मूल प्रकृति, दर्शनतत्व उसके लक्ष्य को जानने का प्रयास तथा उसकी आलोचनात्मक पुनरावलोकन करने का प्रयास किया जाएगा ।

5. Importance of Proposed Investigation

प्रस्तावित शोध कार्य का महत्व

प्रस्तुत शोध अध्ययन में मूल प्रेरणा एम0 एन0 रॉय के शाश्वत् दार्शनिक मूल्य जिसे वो नवमानववाद की संज्ञा देता है, का एक सार्वभौमिक महत्व के रूप में अध्ययन करना है । इस प्रक्रिया में उसके प्रारम्भिक मौलिक मान्यताओं और जीवनशैली को स्पष्ट करके और उसके जीवन के विभिन्न संक्रमणकालों की आलोचनात्मक व्याख्या के माध्यम से ही विभिन्न परिवर्तन और विभिन्न विचारधाराओं के साथ व्यवहारिक अनुभव का एक प्रतिरूप प्रस्तुत करना आवश्यक है ।

साम्यवाद के परिभ्रमण में सम्पूर्ण विश्व की राजनीतिक प्रक्रिया का अनुभव रॉय के जीवन में नये प्रयोगों का कारण बना । 1915 में प्रथम विदेश यात्रा अमेरिका से लेकर मैक्सिको, रूस, चीन आदि से वापस भारत में काग्रेंस के साथ अन्तःक्रिया तक, अपने सार्वभौमिक योगदान जिसे हम नवमानववाद मानते है और उसे एकमात्र भारतीय सार्थक प्रजातान्त्रिक समाज का स्थायी मूल्य और राजनीतिक समाधान है, का अध्ययन करना महत्वपूर्ण एवं आवश्यक है ।

उपरोक्त समस्त विपरीत विचारधाराओं (क्रांतिकारी और साम्यवादी से लेकर शांतिपूर्ण सामाजिक परिवर्तन और प्रजातान्त्रिक दल विहीन समाज, जनता की शक्ति में सहभागिता का प्रतिपादन) और पद्धतियों में से बौद्धिक और सार्वभौमिक प्रत्यक्ष अनुभव के द्वारा रॉय की स्वतन्त्रता के लिए प्रतिबद्धता का अध्ययन प्राथमिकता बन जाता है और इसीलिए इस शोध में रॉय के जीवन और दर्शन का अध्ययन सबसे महत्वपूर्ण लक्ष्य है जो अब तक किसी एक ग्रन्थ अथवा अध्ययन में देखने को नहीं मिला है ।

रॉय एक समन्वयवादी विचारक थे । उनके विचारों में व्यक्तिवाद, भौतिकवाद, समाजवाद, मार्क्सवाद आदि का अद्भूत समन्वय देखने को मिलता है । अतः इस दृष्टि से भी इस विषय के अध्ययन करना महत्वपूर्ण है ।

6. Review of Work already done on the Subject of Proposed Research Study

प्रस्तावित शोध विषय के साहित्य का सर्वेक्षण

समरीन रॉय द्वारा लिखित पुस्तक " M.N. Roy – A political biography " में रॉय के जीवन पर प्रकाश डाला गया है । इसमें रॉय के प्रारम्भिक जीवन में क्रांतिकारी से लेकर राजनीतिक चितंक बनने तक की प्रक्रिया का वर्णन किया गया है । पुस्तक के अंतिम भाग में रॉय का साम्यवाद से मोहभंग और लोकतन्त्र और मानव स्वतन्त्रता में आस्था का वर्णन किया गया है जिसका अंत रॉय को एक मानवतावादी विचारक के रूप में स्थापित करता है ।

डा0 रामेन्द्र नाथ द्वारा लिखित पुस्तक " M.N. Roy's New Humanism and Materialism " जो कि बुद्धिवाडी फाउण्डेशन, पटना द्वारा प्रकाशित की गई है, संक्षिप्त और प्रभावशाली रूप में रॉय के जीवन एवं राजनीतिक दर्शन पर प्रकाश डालती है । डा0 रामेन्द्र वर्णन करते हैं कि किस प्रकार रॉय के राजनीतिक विचार मार्क्सवादी विचारों से भिन्न हैं । रॉय के मानवतावादी दर्शन का भी विश्लेषण इस पुस्तक में किया गया है । 2004 में प्रकाशित Innaiah Narisethi द्वारा लिखित पुस्तक " M.N. Roy – Radical Humanist " में Narisethi लिखते हैं कि रॉय अपने मानवतावादी दर्शन पर कई सारे वैज्ञानिक शोधों के बाद पहुँचा हैं और उसने राष्ट्र की समस्याओं को सुलझाने

में मूल्यों पर बल दिया है न कि पराभौतिक साधनों पर। रॉय ने मानववाद में वैज्ञानिक पद्धति एवं शिक्षा पर बल दिया ।

1998 में प्रकाशित, *के० एस० भारती* द्वारा लिखित पुस्तक " Encyclopaedia of Eminent Thinkers : The Political thought of M. N. Roy " रॉय के राजनीतिक विचारों के संदर्भ में लिखी गई है जिसमें रॉय के दर्शन, शिक्षा, कृषि, उद्योग, गरीबी, समाज, बेरोजगारी, समाजवाद, शांति, लोकतन्त्र आदि पर विचारों का वर्णन किया गया है ।

वीरेन्द्र ग्रोवर द्वारा सम्पादित पुस्तक " Vision and Ideas of M.N. Roy " रॉय के विचारों का आलोचनात्मक विश्लेषण करती है । एशिया में साम्यवाद, भारतीय अर्थव्यवस्था की समस्या, नवमानववाद आन्दोलन, धार्मिक पुर्नजागरण, फासीवाद के दुष्परिणाम, भारतीय संस्कृति, व्यापार आदि पर रॉय के विचारों का वर्णन करती है । रॉय के विभिन्न देशों की यात्राओं का वर्णन भी इस पुस्तक में विस्तार से किया गया है।

सुशांतो दास, Dedication to Freedom : M.N. Roy – The Man and His Ideas, अजंता प्रकाशन, दिल्ली प्रस्तुत पुस्तक दो भागों में विभाजित की गई है । प्रथम भाग में एक व्यक्ति के रूप में रॉय का जीवन तथा दूसरे भाग में उसके राजनीतिक दर्शन की विस्तार से व्याख्या की गई है । यह पुस्तक रॉय के जीवन एवं उसके राजनीतिक विचारों का अद्भुत समन्वय प्रस्तुत करती है ।

डा0 लक्ष्मी सक्सेना द्वारा लिखित पुस्तक " समकालीन भारतीय दर्शन " में रॉय के राजनीतिक विचारों की दार्शनिक व्याख्या करने का प्रयास किया गया है । रॉय के मूल ग्रंथों के आधार पर यथाशक्ति विस्तार से उनके विचारों को प्रस्तुत करने की चेष्ठा की गई है । राजनीति के क्षेत्र में रॉय के दर्शन के अमूल्य योगदान का वर्णन है ।

1982 में *डा0 वी0 पी0 वर्मा* द्वारा लिखित पुस्तक " आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन " भारतीय राजनीतिक विचारकों के मौलिक विचारों एवं विचारधाराओं का वर्णन किया गया है । तथा रॉय के भारतीय स्वतन्त्रता आंदोलन में दिये गये योगदान से संबंधित है ।

वी0 बी0 कार्निक द्वारा लिखित पुस्त्क " M.N. Roy – Political Biography" रॉय के जीवन एवं राजनीतिक दर्शन का वर्णन करती है । रॉय के विभिन्न देशों की यात्रा जैसे अमेरिका, मैक्सिको, चीन तथा वापस भारत लौटना आदि का वर्णन है ।

श्याम मोहन अग्रवाल तथा *महेन्द्र सिंह पलसानिया* द्वारा लिखित पुस्तक "भारतीय राजनीतिक विचारक" आधुनिक राजनीतिक चिन्तकों में एम0 एन0 रॉय के योगदान का अध्ययन करती है । किस प्रकार रॉय ने व्यक्ति की स्वतन्त्रता और समानता का जयघोष कर व्यक्ति की गरिमा पर ध्यान केन्द्रित किया, का विस्तार से वर्णन किया गया है ।

एस0 एम0 गांगुली द्वारा लिखित पुस्तक " Political Philosophy Leftism in India – M.N. Roy and Indian Politics, 1920 – 1948 ", ग्यारह अध्याय में विभाजित

है । जिसमें रॉय के प्रारम्भिक क्रांतिकारी जीवन से नवमानववाद तक की यात्रा का विस्तार से वर्णन किया गया है ।

क्रिस मंजापरा द्वारा रचित पुस्तक " M.N. Roy : Maxism and Colonial Cosmopolitanism " में एम0 एन0 रॉय के विचार ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में बताए गए हैं । 19 वीं शताब्दी में बंगाल से जर्मनी तक विश्व में उथल पुथल की राजनीति पर विचारों का विश्लेषण किया गया है ।

डी0 आर0 बाली द्वारा रचित पुस्तक "Modern Indian thought of M.N. Roy" रॉय के आधुनिक राजनीतिक विचारों पर प्रकाश डालते हैं ।

आर0 एस0 दास की पुस्तक " M.N. Roy – The Humanist Philosopher " रॉय के राजनीतिक दर्शन की दार्शनिक विवेचना करती है ।

आलोक पंत द्वारा लिखित पुस्तक " India Radicalism and M.N. Roy " में रॉय के नवमानववाद की भारतीय संदर्भों में व्याख्या एवं विश्लेषण किया गया है ।

ए0 एन0 अग्रवाल द्वारा लिखित पुस्तक " Socialism without Prejudice " में समाजवाद की पूर्व शर्तों की व्याख्या की गई है ।

राम बक्शी द्वारा लिखित पुस्त्तक " M.N. Roy " रॉय के राजनीतिक विचारों की विस्तार से व्याख्या एवं विश्लेषण करती है ।

7. Research Gaps Identified in the Proposed Field of Investigation

राजनीतिक दर्शन शोध एवं लेखन का एक महत्वपूर्ण कार्यक्षेत्र है । प्रस्तुत शोध में एम0 एन0 रॉय के राजनीतिक दर्शन की आलोचनात्मक व्याख्या की जाएगी । इस शोध में उसके जीवन और दर्शन का अध्ययन किया जाएगा जो अभी तक किसी एक ग्रन्थ या अध्ययन में नहीं मिलता । रॉय का दर्शन बुद्धिजीवी वर्ग तक ही सीमित है और आम जनता में दर्शन के प्रचार का अभाव है । प्रस्तुत शोध सरल भाषा में इस शून्यता को पूर्ण करने का प्रयास है ।

समाजवाद, मानववाद और मार्क्सवाद, इन तीनों प्रतिरूपों को रॉय के सम्बन्ध में पृथ्क अथवा अर्न्तसम्बन्धित प्रारूप में तुलनात्मक अध्ययन साहित्य के रूप में प्रस्तुत नहीं है । अतः प्रस्तुत शोध में तीनों विचारधाराओं के तुलनात्मक अध्ययन का प्रयास किया जाएगा ।

8. Objectives

उद्देश्य

1. एम0 एन0 रॉय के सिद्धान्तों एवं विचारों का विवेचन करना ।

2. नवमानववाद की मूल प्रकृति, दर्शन, तत्व एवं उसके लक्ष्य को जानने का प्रयास करना ।

3. व्यक्ति की स्वतन्त्रता एवं राज्य की सत्ता के मध्य सम्बन्ध जानने का प्रयास करना ।

4. एम0 एन0 रॉय के राजनीतिक दर्शन एवं सिद्धान्तों के राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय महत्व की विवेचना करना ।

5. नवमानववाद के दर्शन का विभिन्न विचारधाराओं के साथ तुलनात्मक अध्ययन करना ।

6. रॉय के जीवन में घटित ऐतिहासिक घटनाओं का तार्किक विश्लेषण करना ।

7. रॉय के राजनीतिक विचारों एवं मूल्यों के अध्ययन के माध्यम से राजनीतिक सिद्धान्त के निर्माण का प्रयास करना ।

8. रॉय के राजनीतिक विचारों का शोध प्रबन्ध में निरूपण एवं मूल्यांकन करना ।

9. शोध का उद्देश्य मात्र रॉय के योगदान को देखना नहीं, वरन् उसकी सकारात्मक भूमिका का अध्ययन करना भी है ।

9. Major Hypothesis, if any

परिकल्पनाएँ

दार्शनिक मूल्यों, जीवन, बौद्धिक कार्य, क्रांति, संघर्ष, विचारों के अनुभववादी विश्लेषण के लिए एक विश्लेषणात्मक उपागम ही मूल प्रकृति है । अतः इस विषय में स्वतः परिकल्पना के प्रमाणिकरण का प्रश्न निहित नहीं है । शोध का उद्देश्य एम0 एन0 रॉय के राजनीतिक दर्शन की विवेचना करना है । यह पराभौतिक, नैतिक, दार्शनिक मूल्यों एवं संघर्ष की पद्धति का अनुभववादी विश्लेषण है । ऐसे अध्ययन में परिकल्पना स्वतः ही नहीं होगी क्योंकि इसमें कथन को प्रमाणित नहीं करना है और ना ही शोध शीर्षक में कोई परिकल्पना निहित है ।

10. Research Methodology

अध्ययन पद्धति

शोध विषय के अध्ययन के लिए, विषय के अन्तर्गत वैज्ञानिक विश्लेषणात्मक विधियों के आधार पर शोध कार्य का समुचित निष्कर्ष निकालने का प्रयास किया जायेगा । आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, वैचारिक सर्वेक्षण के द्वारा प्राप्त तथ्यों का विश्लेषणात्मक एंव तुलनात्मक अध्ययन कर प्रभावित समाज का मूल्यांकन किया जाएगा।

प्रस्तुत अध्ययन की पद्धति दार्शनिक, सैद्धान्तिक, ज्ञानात्मक एवं तुलनात्मक है । रॉय के चिन्तन के मूल दार्शनिक आधारों का परीक्षण तार्किक एवं वस्तुनिष्ठ रूप में किया जाएगा । अध्ययन को यथासंभव एम0 एन0 रॉय की मूल रचनाओं एवं व्याख्याओं के संकलन पर आधारित किया गया है । आवश्यकतानुसार अन्य विद्वानों के अध्ययन एवं टिप्पणियों का भी उपयोग किया जाएगा । अध्ययन विचारों का तार्किक एंव पूर्वाग्रह मुक्त विश्लेषण पर आधारित है ।

उपर्युक्त प्रस्तुत विभिन्न अध्ययन पद्धतियों से उपलब्ध सामग्री के विश्लेषण एवं निष्कर्ष पर ही तथ्यात्मकता और अध्ययन की गहनता से शोधार्थी मूल्यांकनत्मकता की स्थिति पर पहुँचने का प्रयास करेगा । विषय की मूलभूत संदर्भ पुस्तकों एवं पत्र पत्रिकाओं के अध्ययन के आधार पर शोध विषय का अध्ययन किया जाएगा ।

11. Chapter wise details of Proposed Research

प्रस्तावित शोध के अध्याय

अध्याय प्रथम :

एम0 एन0 रॉय के व्यक्तित्व का वैचारिक आयाम –

इस अध्याय में एम0 एन0 रॉय के जीवन की प्रारम्भिक अनुभूतियाँ और उसके विश्व के विभिन्न व्यवस्थाओं के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन किया जाएगा । उपरोक्त अध्याय में पुर्नजागरण, समाजवाद, मार्क्सवाद तथा नवमानववाद के अर्न्तसम्बन्धों की व्याख्या की जाएगी । इतिहास के परिप्रेक्ष्य में रॉय के राजनीतिक विचारों तथा रॉय का विदेशी विचारधाराओं का प्रत्यक्ष अनुभवों का नवमानववाद पर प्रभाव का मूल्यांकन किया जाएगा ।

अध्याय द्वितीय :

एम0 एन0 रॉय के राजनीतिक दर्शन की विशेषता –

इस अध्याय के अर्न्तगत एम0 एन0 रॉय के सम्पूर्ण राजनीतिक दर्शन के प्रमुख विचारों का अध्ययन एवं व्याख्या तथा उसके द्वारा मूल्यों का समाजवाद और मानववाद के रूप में समन्वय की व्याख्या की जाएगी । इसमें मार्क्सवादी विचारधारा, समाजवादी क्रांति और नवमानववाद में उसकी परिणिति का आलोचनात्मक अध्ययन किया जाएगा।

अध्याय तृतीय :

एम0 एन0 रॉय के ज्ञान का दर्शन –

प्रस्तुत अध्याय के अर्न्तगत एम0 एन0 रॉय के द्वन्दवादी एवं भौतिक संस्कृति से सम्बन्धित पराभौतकीय एवं नैतिक विचारों का दार्शनिक विवेचन का प्रयास किया जाएगा ।

इस अध्याय में मानवीय प्रकृति पर रॉय के विचारों का परीक्षण किया जाएगा और रॉय के विचारबन्ध जिसमें वह व्यक्ति को विवेकशील और नैतिक प्रकृति का मानता है, इसका मूल्यांकन करना मुख्य उद्देश्य रहेगा ।

अध्याय चतुर्थ :

एम० एन० रॉय के इतिहास का दर्शन –

इस अध्याय में एम० एन० रॉय के इतिहास के दर्शन सम्बन्धी मान्यताओं एवं मार्क्सवादी व्याख्या से उसकी भिन्नता का अध्ययन किया जाएगा ।

अध्याय पंचम :

नवमानववाद –

इस अध्याय के अन्तर्गत एम० एन० रॉय के नवमानववाद की मूल प्रकृति, विशेषताएँ, लक्षण एवं मुख्य तत्वों की व्याख्या की जाएगी । नवमानववाद और मानववाद में अन्तर का अध्ययन किया जाएगा । नवमानववाद के विचारबन्ध के सन्दर्भ में राजनीतिक संगठन, दलविहीन राजनीतिक व्यवस्था, राजनीतिक विकेन्द्रीकरण आदि सामाजिक परिवर्तन की प्राविधि की संभावना और प्राप्त करने के साधन के सुझाव आदि सम्मिलित होंगे ।

अध्याय षष्ट्म :

सारांश –

इस अध्याय के अन्तर्गत एम० एन० रॉय के राजनीतिक विचारों का सारांश, मूल्यांकन एवं योगदान को सम्मिलित किया जाएगा । तथा वर्तमान में उनके योगदान की प्रासंगिकता का संश्लेषण करके रॉय के अतुलनीय योगदान का अध्ययन किया जाएगा ।

12. Bibliography

Aggarwal, A.N. : " Socialism without Prejudice ", Kitabistanm, Allahabad, 1947

Ahmed, I. : " Trends in Socialistic thought Movement ", The Indian Press, Allahabad, 1937

Awasthi, R.K. : " Scientific Humanism : Socio – Political Ideas of M.N. Roy "

अग्रवाल एवं पलसानिया : " भारतीय राजनीतिक विचारक ", आस्था प्रकाशन, जयपुर, 2010

अवस्थी एवं अवस्थी : " प्रतिनिधि भारतीय राजनीतिक चिन्तक ", रिसर्च पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2009

Bakshi Ram : " M.N. Roy ", Anmol Publication, New Delhi, 1994

Bali, D.R. : " Modern Indian thought of M.N. Roy ", Sterling Publishers Private limited, New Delhi, 1980

Bharathi, K.S. : " Encyclopaedia of Eminent Thinkers : The Political Thought of M.N. Roy " Concept Publishing Company, New Delhi, 1998

Bhattacharjee, G.P. : " Evolution of Political Philosophy of M.N. Roy ", The Minerva Associates, Calcutta, 1971

Chand Prakash : " The Political Philosophy of M.N. Roy ", Sarup & Sons Publications, Meerut, 1985

Chattopadhyay, D.P. : " Indian Matereralism ", Nav Jagrati Samaj, Bombay 1978

Das Shomu : " M.N. Roy and Radical Humanism ", A.J.B.H. Wadia Publication, New Delhi, 1961

Das Sushanto : " M.N. Roy – The Man and his Ideas ", The Indian Renaissance Institute, Delhi, 1998

Das, R.S. : " M.N. Roy – The Humanist Philosopher ", The Minerva Associates, Calcutta, 1959

Datta, A. : " The way to Co-operative Socialism ", The Radical Humanist Publication, Calcutta, 1965

Dhar Niranjan : " The Political thought of M.N. Roy ", Eureka Publishers, New Delhi, 1966

Dhar, N. : " The Political thought of M.N. Roy ", Eureka Publisher, Calcutta, 1966

डा0 पुरूषोत्तम नागर : " आधुनिक सामाजिक एवं राजनीतिक चिंतन ", राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 1984

Ghosh, S. : " Socialism and Communism in India ", Allied Publishers, Bombay, 1973

Grover Virendra : " A Biography of his Vision and Ideas ", Deep and Deep Publisher, New Delhi, 1998

Grover, D.C. : " M.N. Roy – A study of Revolution and Reason in Indian Politics ", Minerva Associates, Calcutta, 1973

Karnik, V.B. : " M.N. Roy : Political biography " Nav Jagriti Samaj, Bombay, 1973

Karnik, V.B. : " M.N. Roy " Paperback Publisher, New Delhi, 2005

लक्ष्मी सक्सेना : " समकालीन भारतीय दर्शन " उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, 1983

Manjapra Kris : " M.N. Roy – Maxism and Colonial Cosmopolitanism "

एम0 एन0 रॉय : " नवमानववाद " वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर, 1988

Narisetti Innaiah : " M.N. Roy – Radical Humanist ", Prometheus Book Publisher, U.S.A., 2004

Nath, Ramendra : " M.N. Roy's New Humanism and Materialism ", Buddiwari Foundation, Patna, 2001

Nigram R.L. : " Radical Humanism of M.N. Roy ", Indus Publications, Calcutta, 1995

Ojha Vishnudeo Narain : " M.N. Roy and His Philosophical Ideas ", Paperback Publisher, New Delhi, 1975

Pant Alok : " Indian Radicalism and M.N. Roy ", Adhyayan Publication, New Delhi, 2005

Roy M.N. : " My Experiences in China ", Renaissance Publishers, New Delhi, 1945

Roy M.N. : " Reason, Romanticism and Revolution ", Calcutta Publisher, Calcutta, 1952

Roy, Samaren : " M.N. Roy – A Political biography " Orient longman limited, New Delhi, 1997

वीरकेश्वर प्रसाद सिंह : " आधुनिक राजनीतिक विचारधाराऐं ", ज्ञानदा प्रकाशन, नई दिल्ली, 1978

जनरल और पत्र पत्रिकाएं

1. साउथ एशियन जनरल ऑफ सोशो, पॉलिटिकल स्टेडीज्, केरल

2. इकॉनोमिक एण्ड पॉलिटिकल वीकली, नई दिल्ली

3. न्यू ऐज, नई दिल्ली

4. सेमिनार, नई दिल्ली

5. द एशियन ऐज, नई दिल्ली

6. योजना, नई दिल्ली

7. द स्टेटमेन्ट वीकली, कोलकत्ता

समाचार पत्र

1. हिन्दुस्तान टाइम्स, नई दिल्ली

2. इण्डियन एक्सप्रेस, नई दिल्ली

3. जनसत्ता, नई दिल्ली

4. द हिन्दु, नई दिल्ली

5. टाइम्स ऑफ इण्डिया, नई दिल्ली

Signature of the Candidate with date

Outline Approved

(Dr. S.K. SINGH)

Name and Signature of the Supervisor with date and seal

Dr. S.K. Singh
Lecturer in Political Science
Government College
Ajmer

Appendix – VI

Certificate by Supervisor

Certified that :

1. I am willing to guide the research work of Smt. Jyoti Deval on the above subject if she registered for Ph.D.

2. To the best of my knowledge, the subject selected has not been studied and is not being studied so far in any University.

3. The subject is of sufficient scope to keep the candidate engaged for two years.

4. The subject will lead to a valuable contribution. I have seen and approved the outline and bibliography, etc. submitted by the candidate.

5. Necessary facilities are available in the department for the above research work (Certificate from Principal /Head University Department with regards to facilities available is enclosed).

6. I have 03 Research candidate registered under my supervision and the serial number of this candidate whose application being forwarded for registration is fourth (give the serial number).

7. The candidate is not in a close relation (the term of close relation is defined in the examination ordinance of the University).

(Dr. S.K. Singh)
14.05.2015

Signature of the
Supervisor with date

Certificate that the available facilities will be extended to Smt. Jyoti Deval for research work if she registered for Ph.D.

अनुराधा त्रिपाठी
15-5-15

Signature of the Principal /
~~Director~~ of the Institution
With date

उप-प्राचार्य
राजकीय महाविद्यालय, अजमेर

Signature of the Head
Department with date

व्याख्याता-राजनीति विज्ञान
राजकीय महाविद्यालय, अजमेर